बर्नेल व फ्लोरिन्डा

एक हिस्पानी कथा

लेखनः एरिक ए. किमल
चित्रः रॉबर्ट रैयवस्की
भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

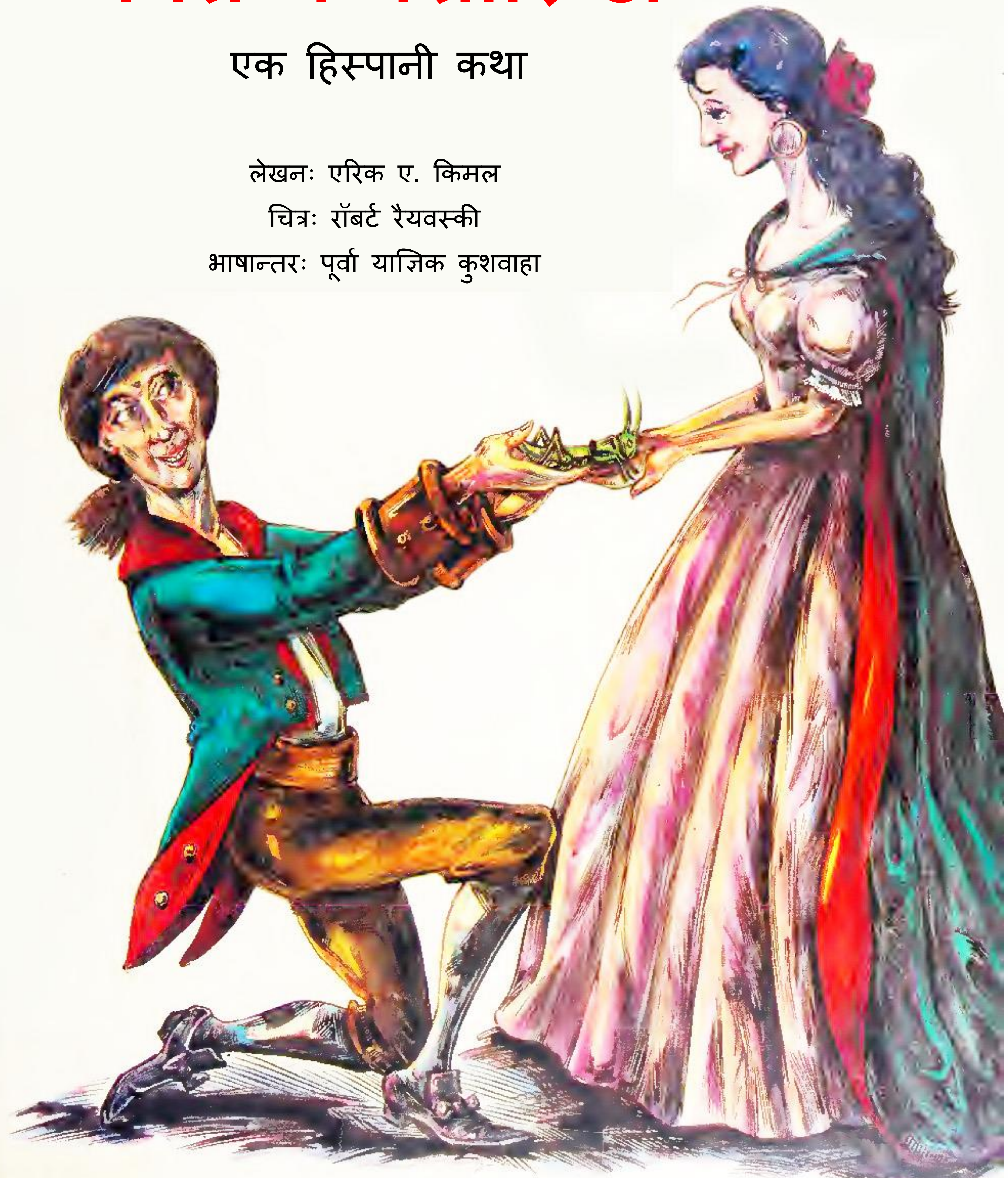

एक समय प्रेमियों का एक जोड़ा था - बर्नेल और फ्लोरिन्डा, वे शादी करना चाहते थे। बर्नेल देखने-भालने में बड़ा खूबसूरत था, पर ग़रीब था। धन-सम्पत्ति के नाम पर उसके पास बस एक अदद खेत था जो टिड्डों से अटा था। इधर फ्लोरिन्डा के पिता डॉन गार्सिलासो जो रईस होने के साथ सेविल के हाक़िम भी थे। उन्होंने बर्नेल को हुकुम दिया कि वह उनकी बेटी से दूर रहे, और कहा कि "मैं अपनी बेटी की शादी एक घुमन्तु ठठेरे के बेटे तक से करना पसन्द करूंगा। कम-से-कम वह बर्तन-भांडों की मरम्मत कर उसका पेट तो पाल सकेगा।"

पर बर्नेल ने भी ठान ली कि वह अपनी किस्मत खुद संवारेगा और फ्लोरिन्डा को पा लेगा। बोरी भर टिड्डों और अपनी चतुराई के भरोसे बर्नेल ने डॉन गार्सिलासो को चकमा देने का तरीका आख़िर तलाश ही लिया।

बर्नेल व फ्लोरिन्डा

एक हिस्पानी कथा

लेखनः एरिक ए. किमल

चित्रः रॉबर्ट रैयवस्की

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

कैरल ओर बैरी के लिए
- ई.ए.के.
क्लैयर के लिए
- आर.आर.

लेखक की टिप्पणी

बर्नेल और फ्लोरिन्डा एक मौलिक कहानी है, जिसे मैंने चित्रात्मक हिस्पानी शैली में लिखा है। इस कहानी का विचार मुझे तब सूझा जब मेरी पत्नी डोरिस और मैं ओलम्पिक नैशनल पार्क के हरिकेन रिज को गाड़ी से पार कर रहे थे। उस सड़क का चप्पा-चप्पा टिड्डों से भरा था। डोरिस ने, जिसे टिड्डों से नफ़रत है, कहा "खुदा को ये जीव बेहद पसन्द होंगे, नहीं तो वह इतने सारे टिड्डे बनाता ही क्यों?" पर यह कहने के बावजूद वह गाड़ी से नीचे नहीं उतरी।

चित्रकार की टिप्पणी

बर्नेल और फ्लोरिन्डा की कहानी ने मुझे युरोपीय नाटकों की याद दिलाई। इसने मुझे प्रेरित किया कि मैं कलम, स्याही और चटक जलरंगों से इसक पात्रों को अस्वाभाविक और अतिरंजित शैली में पेश करुं। मैंने स्पेन की पृष्ठभूमि को भड़कीले रंगों में बनाया मानो वे मंच सज्जा का हिस्सा हों।

एक समय सेविल शहर में प्रेमियों को एक जोड़ा रहता था। उनके नाम थे बर्नेल और फ्लोरिन्डा। बर्नेल तेज़तर्रार, आकर्षक और हाज़िरजवाब नौजवान था, पर साथ ही ग़रीब भी था। उसकी एकमात्र सम्पत्ति थी एक खेत जिसमें टिड्डे ही टिड्डे भरे थे। इधर फ्लोरिन्डा डॉन गार्सिलासो की बेटी थी, जो शहर के हाक़िम (मेयर) होने के साथ स्पेन के सबसे रईस लोगों में एक था। डॉन गार्सिलासो को प्रेम से कोई मतलब नहीं था। उसे सिर्फ़ पैसे से मतलब था।

बर्नेल हर शाम गुपचुप फ्लोरिन्डा के छज्जे के नीचे जाता और उसे प्रेम गीत सुनाया करता।

“ओ फ्लोरिन्डा, मेरे प्रेम का मधुर-मीठा फूल
तेरे कजरारे नैन बेधते हमेशा मेरा यह दिल!”

गीत सुन फ्लोरिन्डा अपने हथपंखे के पीछे मुँछ छिपा शरमाती और तब एक लाल गुलाब नीचे बर्नेल की ओर फेंक देती।

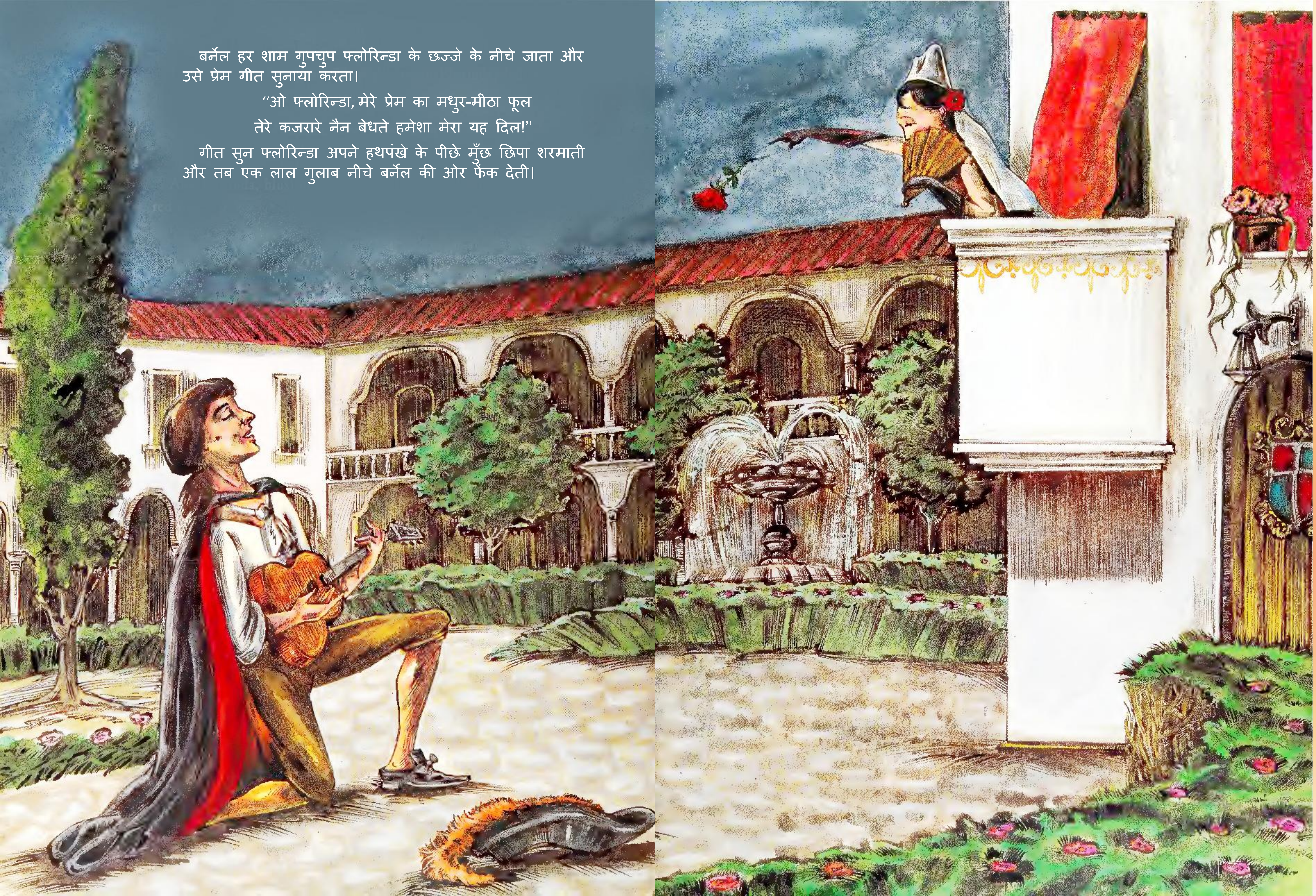

एक शाम गुलाब के बदले बर्नेल पर किसीने बाल्टी भर ठंडा पानी उलीचा।

"भाग यहाँ से निकम्मा आवारा!" डॉन गार्सिलासो छज्जे पर खड़ा चीखा। "ख़बरदार जो आइन्दा कभी मेरी बेटी से बात की।"

हालांकि बर्नेल पूरी तरह गीला हो चुका था, वह अदब से झुका और बोला, "*सेनॉर अलकाल्डे* (हाकिम) मेरी ग़रीबी के कारण मुझसे नफ़रत न करें। मैं फ्लोरिन्डा से प्यार करता हूँ और उससे शादी करना चाहता हूँ। बेशक आपकी रज़ामन्दी से।"

डॉन गार्सिलासो ने हिकारत से जवाब दिया, "ढ़ीठ, मुँहज़ोर, तू जिएगा कैसे? अपने खेत के टिड्डों के बूते?" तब आगे जोड़ा, "बेहतर यह होगा कि मैं अपनी बेटी की शादी किसी ठठेरे के बेटे से होती देखूं। कम-से-कम वह टूटे-फूटे बर्तन-भांडों की मरम्मत कर उसका पेट तो पाल सकेगा।"

यह भारी तौहीन थी। इतनी भारी कि तौहीन करने वाले को तलवार या बन्दूक से द्वन्द्वयुद्ध के लिए ललकारा जा सकता था। पर बर्नेल के पास बन्दूक तो थी नहीं, और तलवार के नाम पर बस दादा की जंग लगी निशानी थी। फिर भी उसने अपने पुरखों के, जो सूरमा और सामन्त थे, फ़क्र से भर कर जवाब दिया, "आप मेरी चाहे जितनी तौहीन करना चाहें करें, पर वह नहीं मिटा सकते जो मेरे दिल पर लिखा जा चुका है। मैं फ्लोरिन्डा से बेइन्तहा प्यार करता हूँ। सो शादी तो मैं उसीसे करूंगा। और अपनी किस्मत भी मैं उन्हीं टिड्डों से ही संवारूंगा।"

दिलेरी से भरे लफ़्ज़ थे ये। पर कथनी एक चीज़ होती है और करनी कुछ और। अगले दिन अल्ल सुबह बर्नेल अपने खेत में खड़ा था, टिड्डों के झुंड से घिरा।

“ये जीव किसी काम के तो होंगे। वरना ख़ुदा इतने ढ़ेर टिड्डे बनाता ही क्यों?” यह सोच बर्नेल ने ख़ुदा का मकसद तलाशने की ठानी। पूरी सुबह वह टिड्डे पकड़ता रहा, जब तक उसका बोरा भर न गया। तब फड़फड़ते, कुलबुलाते कीड़ों से भरे बोरे को अपने कंधे पर लाद, सड़क पर चल पड़ा।

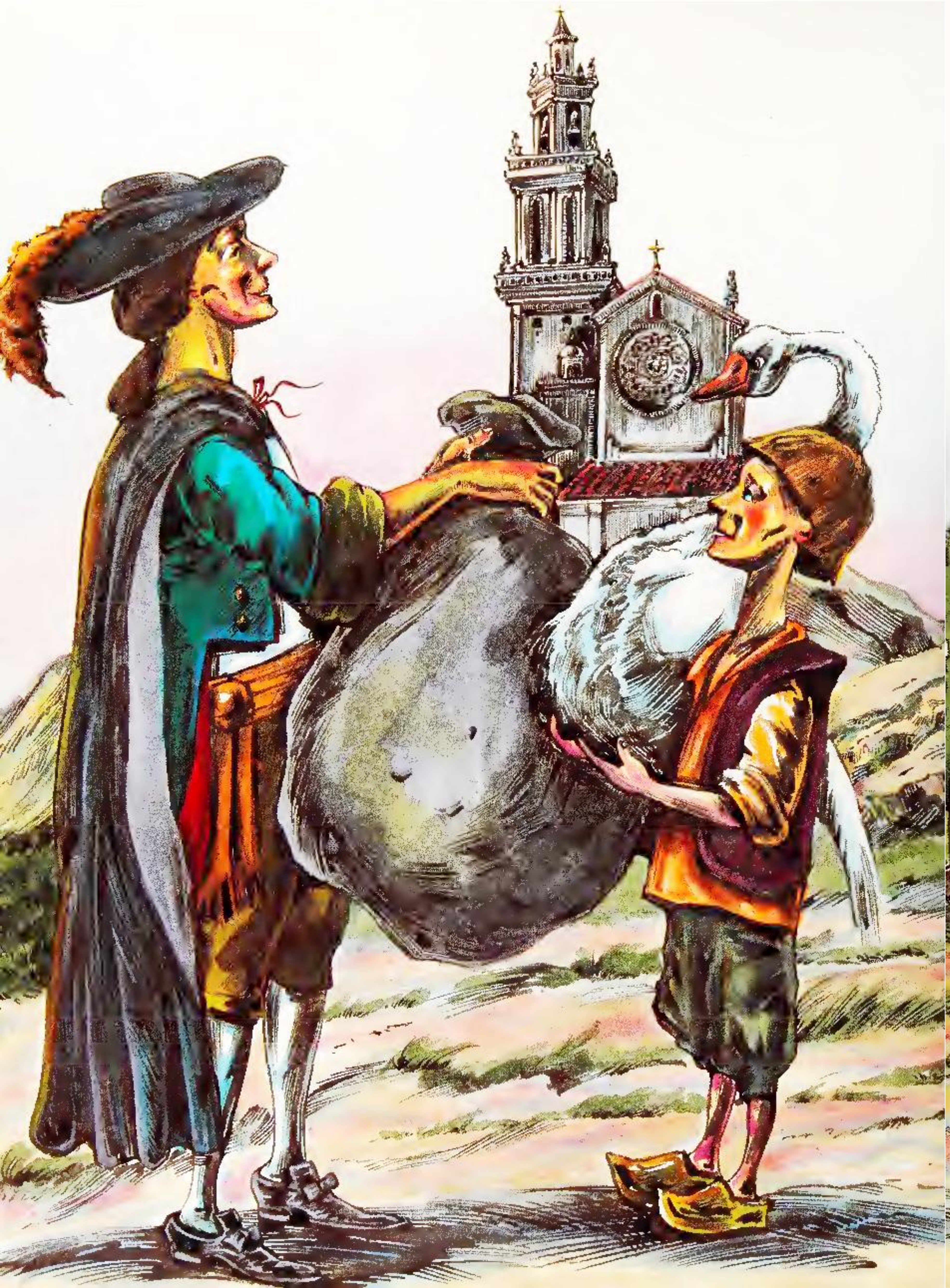

कुछ आगे जाने पर उसे एक लड़का मिला जो हंसों के झुंड को हाँकता बाज़ार ले जा रहा था।

"अरे कितनी चिल्ल-पौं मचा रहे हैं ये हंस!" बर्नेल ने कहा।

"ये बेचारे भूखे हैं, मेरे पास इन्हें खिलाने को कुछ है ही नहीं," लड़के ने कहा।

"हंसों को टिड्डे पसन्द हैं। मेरे पास बोरा भर टिड्डे हैं। उनके बदले तुम मुझे क्या दे सकते हो?"

हंसों वाला लड़का खुश हो गया। "मेरा एक हंस ले लो।"

बर्नेल ने हंसों के सामनी अपने टिड्डे उलीचे ही थे किवे सब उन पर टूट पड़े। तब बर्नेल ने एक मोटा-ताज़ा हंस चुना और उसे बोरे में भर आगे बढ़ा।

कुछ समय बाद वह एक लुहारखाने के सामने से गुज़रा। लुहार कारखाने के दरवाज़े पर खड़ा ठंडी साँसे भर रहा था।

"इतने परेशान क्यों हो भाई?" बर्नेन ने पूछा।

"अरे मेरी बेटी की कल शादी है। मुझे शादी की दावत के लिए एक हंस लाने को कहा था मेरी बीवी ने। पर मैं भूल गया। अब तो वह मेरा कत्ल ही कर डालेगी।"

"मेरे पास एक हंस है," बर्नेल झट से बोला। "पर उसके बदले तुम मुझे क्या दे सकते हो?"

"बोरा भर कोयला।"

बर्नेल ने हंस लुहार को थमाया और बदले में कोयला ले लिया। भारी बोरे को पीठ पर लादे वह आगे चला।

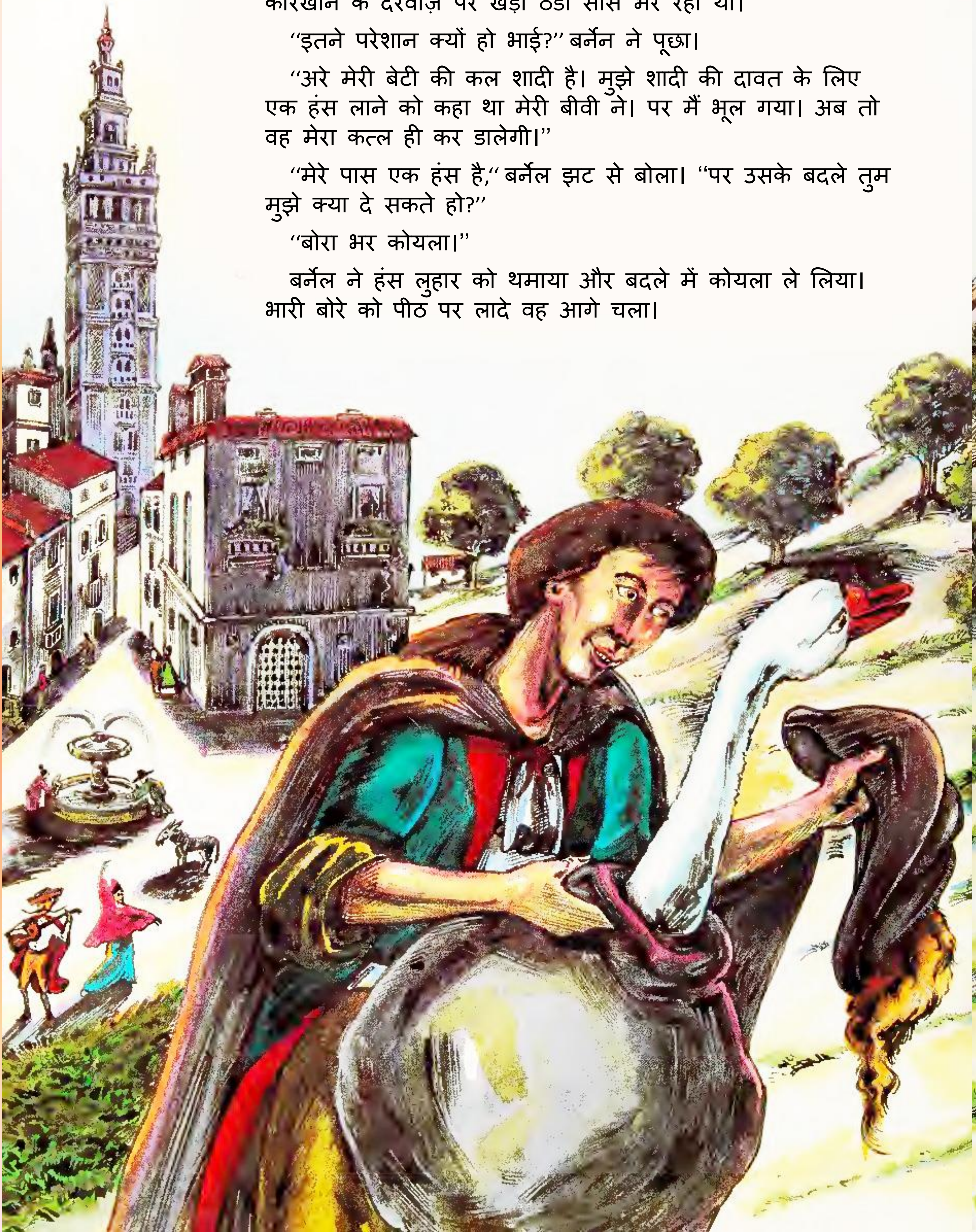

कुछ समय चलने के बाद वह एक मोमबत्ती बनाने वाले की दुकान के सामने से निकला। अन्दर से आती चिल्लाचिल्ली सुन उसने दुकान में झांक कर देखा। मोमबत्ती बनाने वाला अपने शागिर्द को पीटने उसके पीछे बेंत लिए दौड़ रहा था।

"अरे छोकरे को मत पीटो," बर्नेल ने कहा।

"यह है ही इस लायक!" मोमबत्ती बनाने वाला गुस्से से भर बोला। "मैंने इसे और कोयला मंगवाने को कहा था, पर पट्ठा भूल गया। अब आग बुझ गई है, और मोम सख़्त हो चला है। इसकी वजह से दिन भर की मेहनत पर पानी फिर जाएगा।"

"अरे कोयला चाहिए ना तुम्हें? लो बोरी भर कोयला। पर इसके बदले मुझे क्या दोगे?"

"जितनी मोमबत्तियाँ उठा सको उठा लो।" बर्नेल ने कोयला उलटा और खाली बोरे में मोमबत्तियाँ भर लीं। झोले को पीठ पर लादा और फिर से सड़क पर चल पड़ा।

कुछ देर चलने के बाद वह एक सराय तक पहुँचा। एक दुष्ट नज़र आने वाला सराय मालिक दरवाज़े पर खड़ा था। उसकी बाँयी आँख थेगली से ढ़की थी, वह काला चोंगा और तिकोनी टोपी पहने था। वह अपनी छाती कूटते कहता जा रहा था, "हाय, हाय! मैं तो लुट गया! मैं बरबाद हो गया!"

"अरे भाई हुआ क्या है?" बर्नेल ने पूछा।

"परेशानियाँ मेरे सिर पर आन पड़ी हैं," सराय मालिक तड़प कर बोला। उसने सराय का दरवाज़ा खोला।

बर्नेल को अन्दर एक लाश दिखाई दी। वह मरा हुआ इन्सान ज़रूर एक घुमन्तु ठठेरा रहा होगा, क्योंकि उसके इर्द-गिर्द बर्तन-भांडे बिखरे थे।

"मैं पुलिस बुला लाता हूँ," बर्नेल ने कहा।

सराय मालिक चेहरा ज़र्द पड़ गया। "अरे, ऐसा न करना! मैं तो पहले से ही उलझनों से घिरा हूँ अगर अफसर इस लाश को देखेगें तो मुझे ही इसका कातिल समझेंगे। कसम से मैंने इसे नहीं मारा! यह ठठेरा सराय में आया, उसने खाने के लिए फल मांगे। मैंने उसे आड़ू दिए। इस लालची भुक्खड़ ने साबुत आड़ू निगलने की कोशिश की, सो एक बीज गले में फंस गया और वह फ़र्श पर पसर गया। हाय मेरी किस्मत! मैं करूं तो क्या?"

"मैं तुम्हारी मदद कर सकता हूँ," बर्नेल ने कहा। "मेरे झोले में रखी इन मोमबत्तियों को ले पास वाले गिरजे में जाओ। वहाँ इन्हें जलाओ, ताकि इस बेचारे की रूह को जन्नत मिले। मैं इसकी लाश को सेविल ले जाता हूँ, वहाँ का हाकिम मेरा दोस्त है। मैं उसे सब समझा दूंगा, वे बाइज़्ज़त इसे दफ़नाने की व्यवस्था कर देंगे।"

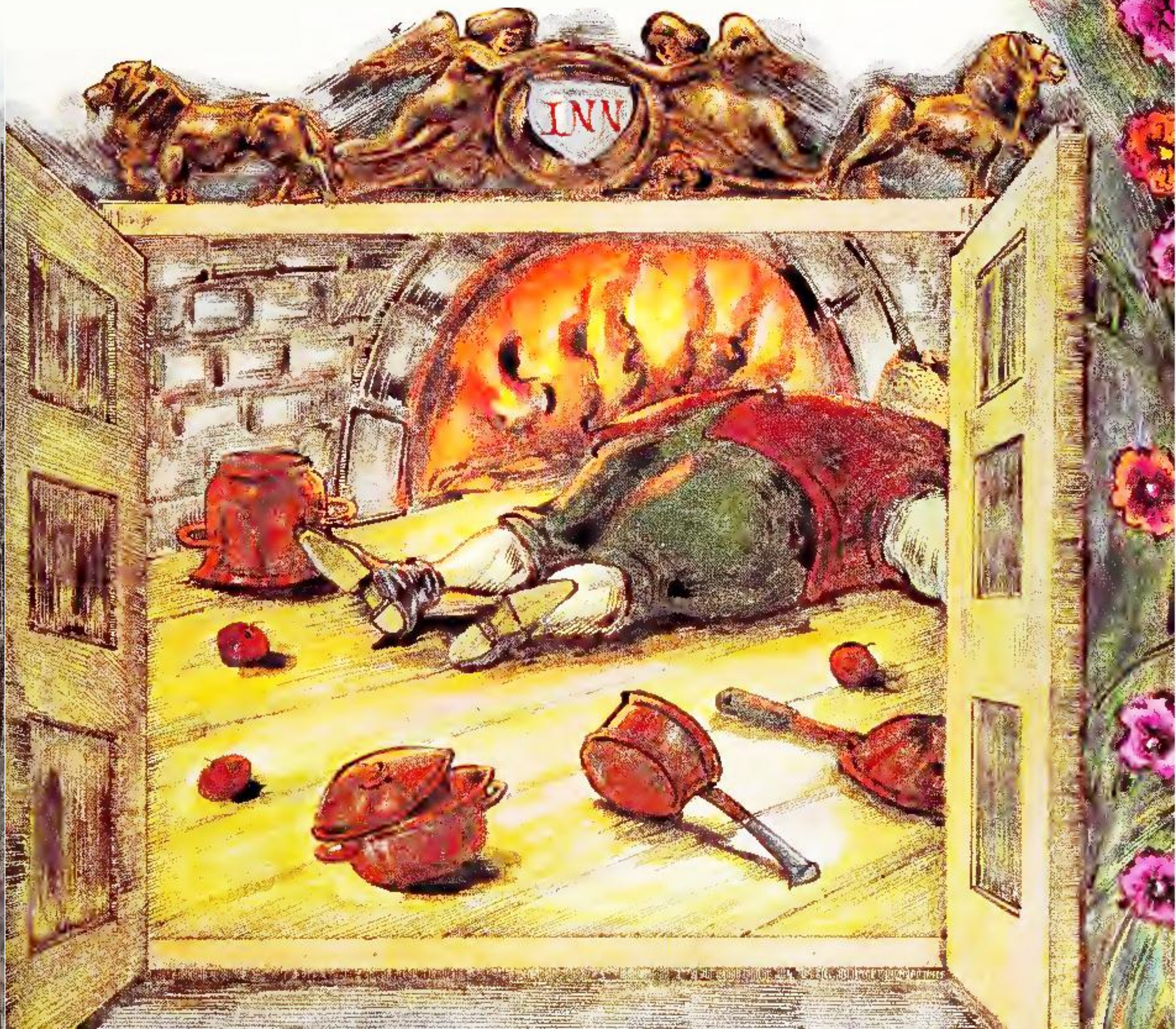

सराय मालिक ने राहत से भर बर्नेल का हाथ चूमा। ''सेनॉर, आप यह कर दें तो ख़ुदा आपको हज़ार नेहमत बख्शे।''

बर्नेल ने बोरे से मोमबत्तियाँ निकालीं और उसमें ठठेरे और उसके बर्तन-भांडों को ठूंसा। तब सराय मालिक से उसका चोंगा, आँख की थेगली और तिकोनी टोपी उधार ले, सेविल की दिशा में निकल पड़ा।

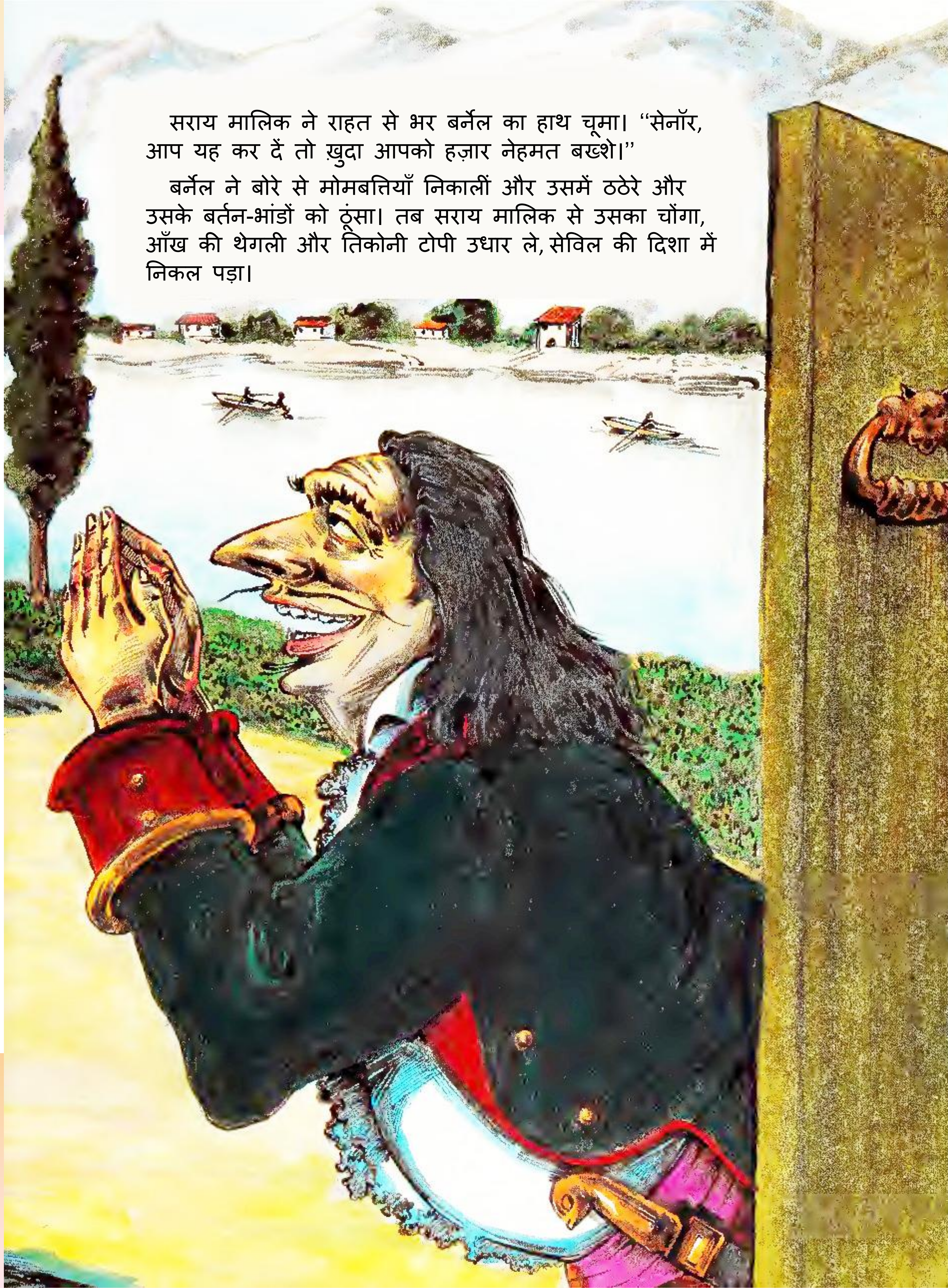

जब वह सेविल पहुँचा सिएस्टा (दोपहर का आराम) का समय हो चुका था। एक भी बन्दा सड़क पर नज़र नहीं आ रहा था। बर्नेल तेज़ी से सुनसान सड़क पर बढ़ा और डॉन गार्सिलासो के घर के सामने जा पहुँचा। उसने फुर्ती से अपनी बोरी खाली की। ठठेरे को दीवार से टिका बैठाया और उसके बर्तन उसके गिर्द सजा दिए। तब वह मकान के कोने में दीवार की आड़ ले इन्तज़ार करने लगा।

काफ़ी देर बाद दरवाज़ा खुला और डॉन गार्सिलासो शान से अकड़ता बाहर निकला। उसने ठठेरे को देखा, तब उसके बर्तनों को। सबसे छोटा बर्तन उठाया और पूछा।

"इसकी कीमत क्या है?"

ज़ाहिर है ठठेरा ने कोई जवाब न दिया। डॉन गार्सिलासो ने आवाज़ ऊँची की और बोला,

"मैंने कहा, इसकी कीमत क्या है?"

कोई जवाब नहीं मिला। डॉन गार्सिलासो का पारा चढ़ने लगा।

"मामला क्या है? क्या तुम सो रहे हो?"

तब भी कोई जवाब न पा डॉन गार्सिलासो का गुस्सा फट पड़ा। "जब हाकिम तुमसे कुछ पूछे तो तुम जवाब दोगे!" इतना कह उसने ठठेरे की कनपटी पर ज़बरदस्त झापड़ जड़ दिया। ठठेरा लुढ़क गया। बर्नेल फ़ौरन आड़ से निकल दौड़ता सामने आया।

"आपने एक बेकसूर इन्सान को, एक ग़रीब ठठेरे को मार डाला है।" बर्नेल ने पुरज़ोर आवाज़ में कहा। "इस कंजूस, मक्खीचूस ने हद ही कर दी है। वह सोचता है कि उसकी दौलत उसे ईमानदार बाशिन्दों को मारने का हक़ देती है!"

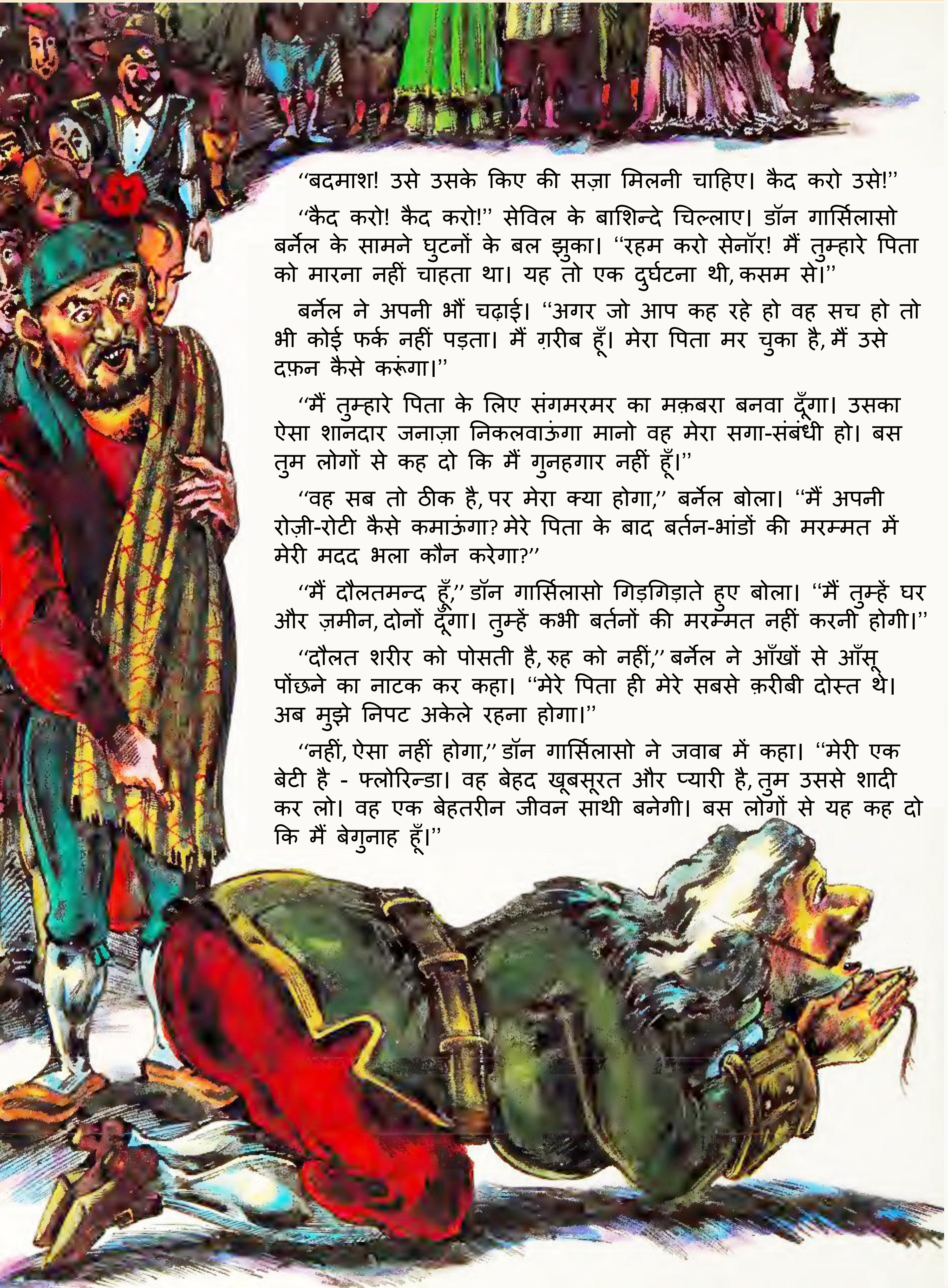

"बदमाश! उसे उसके किए की सज़ा मिलनी चाहिए। कैद करो उसे!"

"कैद करो! कैद करो!" सेविल के बाशिन्दे चिल्लाए। डॉन गार्सिलासो बर्नेल के सामने घुटनों के बल झुका। "रहम करो सेनॉर! मैं तुम्हारे पिता को मारना नहीं चाहता था। यह तो एक दुर्घटना थी, कसम से।"

बर्नेल ने अपनी भौं चढ़ाई। "अगर जो आप कह रहे हो वह सच हो तो भी कोई फर्क नहीं पड़ता। मैं ग़रीब हूँ। मेरा पिता मर चुका है, मैं उसे दफ़न कैसे करूंगा।"

"मैं तुम्हारे पिता के लिए संगमरमर का मक़बरा बनवा दूँगा। उसका ऐसा शानदार जनाज़ा निकलवाऊंगा मानो वह मेरा सगा-संबंधी हो। बस तुम लोगों से कह दो कि मैं गुनहगार नहीं हूँ।"

"वह सब तो ठीक है, पर मेरा क्या होगा," बर्नेल बोला। "मैं अपनी रोज़ी-रोटी कैसे कमाऊंगा? मेरे पिता के बाद बर्तन-भांडों की मरम्मत में मेरी मदद भला कौन करेगा?"

"मैं दौलतमन्द हूँ," डॉन गार्सिलासो गिड़गिड़ाते हुए बोला। "मैं तुम्हें घर और ज़मीन, दोनों दूँगा। तुम्हें कभी बर्तनों की मरम्मत नहीं करनी होगी।"

"दौलत शरीर को पोसती है, रुह को नहीं," बर्नेल ने आँखों से आँसू पोंछने का नाटक कर कहा। "मेरे पिता ही मेरे सबसे क़रीबी दोस्त थे। अब मुझे निपट अकेले रहना होगा।"

"नहीं, ऐसा नहीं होगा," डॉन गार्सिलासो ने जवाब में कहा। "मेरी एक बेटी है - फ्लोरिन्डा। वह बेहद खूबसूरत और प्यारी है, तुम उससे शादी कर लो। वह एक बेहतरीन जीवन साथी बनेगी। बस लोगों से यह कह दो कि मैं बेगुनाह हूँ।"

यह सुन बर्नेल की तो मानो साँस ही रुक गई। "आप मज़ाक कर रहे हैं। मैं यह कैसे मान लूं कि डॉन गार्सिलासो, सिवेल का हाक़िम, अपनी बेटी का हाथ एक घुमन्तु ठठेरे के बेटे को थमा देंगे।"

"मैं सच कह रहा हूँ मेरा विश्वास करो।"

"तो मुझे मंज़ूर है," बर्नेल ने कहा। "पर एक शर्त पर कि फ्लोरिन्डा भी मुझ से ब्याह करना चाहे।" इतना कह उसने अपनी आँख पर लगी थेगली हटाई, चोंगा उतारा, और सराय मालिक की तिकोनी टोपी हाथ में ले अदब से झुका।

"मुझे चकमा दिया गया है!" डॉन गार्सिलासो बर्नेल को पहचान चीखा। पर इसके पहले ही फ्लोरिन्डा छज्जे से झांक "मुझे मंज़ूर है!" कह चुकी थी।

डॉन गार्सिलासो नाराज़ हुआ, पर उसे अपना वादा पूरा करना पड़ा। सेविल के बाशिन्दों ने उसे अपने वादे से मुकरने नहीं दिया। बर्नेल और फ्लोरिन्डा की शादी सेविल के गिरजे में हुई और डॉन गार्सिलासो को बेमन से ही सही, उन्हें अपना आशीष देना ही पड़ा। यों अंत-तंत बर्नेल ने जो ठाना था वह पूरा कर ही लिया। फ्लोरिन्डा के पिता के न चाहते हुए भी उसने अपनी प्रमिका से ब्याह रचाया और टिड्डों के सहारे ही अपनी किस्मत संवार ली।

और वह ठठेरा, उसका भला क्या हुआ? उसे संगमरमर से बने मकबरे में दफ़नाया गया। या कहें लगभग दफ़नाया गया। जब उसकी लाश को ताबूत में रख मकबरे की ओर ले जाया जा रहा था, ताबूत उठाने वालों में से एक का पैर अचानक मुड़ा। उस झटके से उसके गले में अटकी आड़ू की गुठली अपनी जगह से हट गई।

ठठेरा फिर से ज़िन्दा हो गया। उसने अपनी आँखें खोलीं, ताबूत का ढक्कन उठाया और उठ बैठा।

"बदमाश सराय मालिक!" वह चीखा। "मैं सराय में एक रात सोना चाहता था, हमेशा-हमेशा के लिए नहीं!" वह ताबूत से कूदा और तेज़ी से भाग खड़ा हुआ।

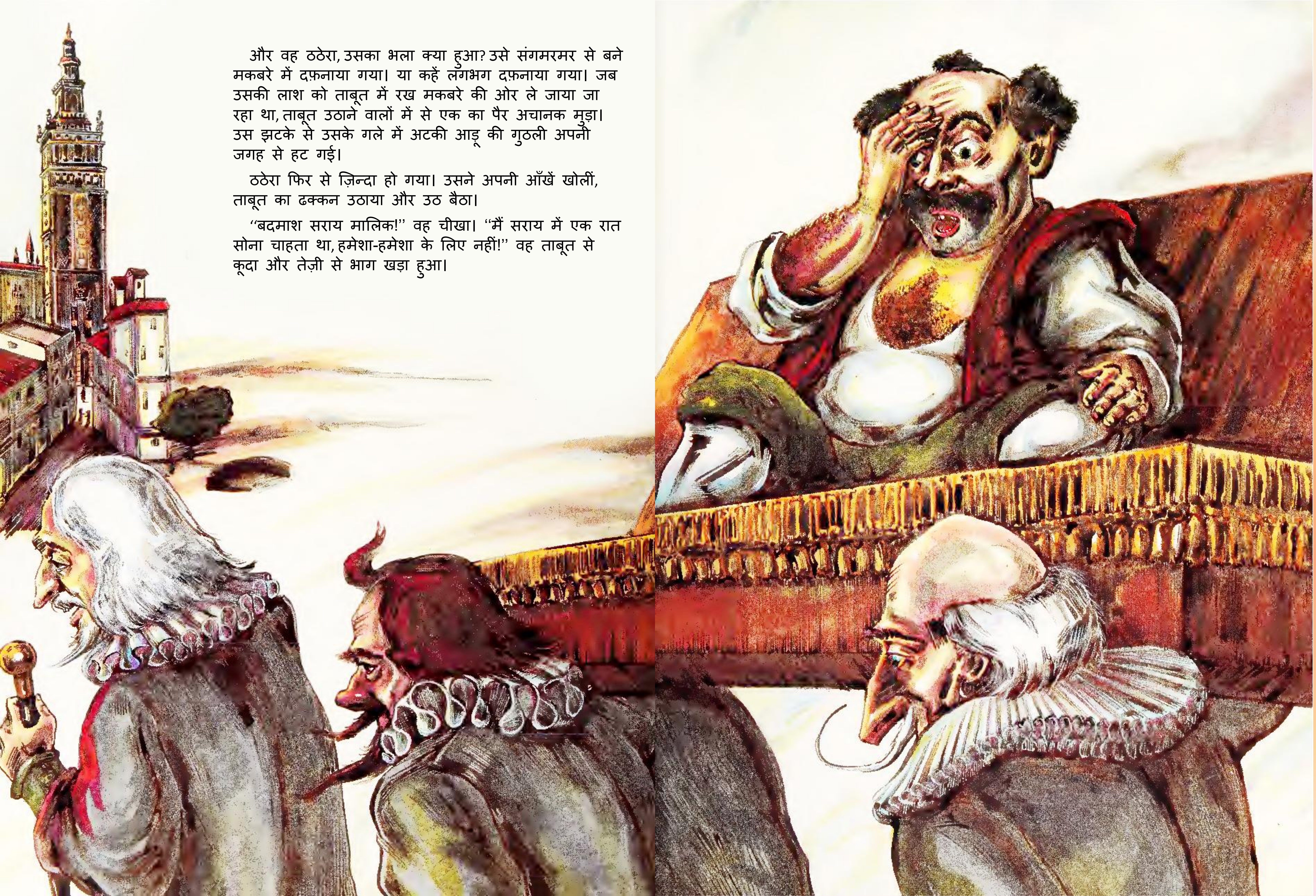

वह फिर कभी उस इलाके में नज़र ही नहीं आया। पर सेविल के गिरजे में आज भी संगमरमर का एक शानदार मकबरा देखा जा सकता है। सैलानी अक्सर पूछते हैं कि वहाँ कौनसा सामन्त या राजकुमार दफ़न है। पर मकबरा तो उस घुमन्तु ठठेरे के लिए बनाया गया था, जिसे वहाँ दफ़नाया ही नहीं गया!

मकबरे में कुछ है तो सिर्फ़ आड़ू की एक गुठली।

एरिक ए. किमल पोर्टलैण्ड स्टेट युनिवर्सिटी में शिक्षा के प्रोफेसर हैं। उन्होंने दुनिया के अनेक देशों की कहानियाँ लिखीं हैं, उन्हें रूपान्तरित किया है, उनका पुनर्कथन किया है। हाल में प्रकाशित उनकी रचनाएं हैं - *द विचेस् फेसः अ मैक्सिकन टेल; एशर एण्ड द कैपमेकरः अ हनुका स्टोरी;* और *द जिंजरब्रैड मैन*। वे देश भर के स्कूलों व सम्मेलनों में कथावाचन कार्यशालाएं करते हैं। वे अपनी पत्नी डोरिस के साथ पोर्टलैण्ड, ऑरेगॉन में रहते हैं।

रॉबर्ट रैयवस्की का जन्म और शिक्षा-दीक्षा मॉस्को में हुई। वे पंद्रह से अधिक बाल-पुस्तकों को चित्रों से सजा चुके हैं, जिनमें एरिक ए. किमल की रचना थ्री *सैकस् ऑफ ट्रूथः ए स्टोरी फ्रॉम फ्रांस* भी शामिल है। वे अपनी पत्नी इन्ना व दो बच्चों के साथ चैरी हिल, न्यू जर्सी में रहते हैं।